श्री ११०८ शङ्कराचार्य कृत

पञ्चीकरणम्

(प्रणवार्थः)

कानपुर प्रान्तान्तर्गत अमौर निवासि-

श्रीमत् पं० महादेव शर्म पाण्डेय शास्त्रिकृत

भाषा भावार्थ दीपिका सहितम् ।

प्रकाशक

बा० रूप किशोर टण्डन

एम० ए०, एल एल० बी० एडवोकेट

मुद्रक

पं० चन्द्रशेखर शुक्ल, क़ानून प्रेस – कानपुर

सम्वत् १९९८ वि०

प्रथम वार १०००] [मूल्य ॥)

भूमिका

ॐ तत् सद् ब्रह्मणेनमः

वैदिक साहित्य के भीतर ओम् शब्द का बड़ा महत्व है यहां तक कि आदरार्थ जैसे माता पिता आदि का नित्य नाम साधारण नहीं लिया जाता उसी भांति इस (ओम्) का भी एक पर्य्याय (उपनाम) प्रणव रख लिया गया है (जैसे माता पिता आदि को मां, अम्मा, बप्पा आदि कहते हैं) वेद मन्त्र व उपनिषद व दर्शन आदि सभी शास्त्रों में माहात्म्य जप, विचार आदि रूप से इस (ओम्) का आधार लिया गया है तो शङ्का यह होती है कि यह केवल शब्द ही शब्द मात्र है कि और कुछ ? इसी शङ्का को लेकर कहीं कहीं उपनिषदोंमें इसके अर्थ का भी विचार किया है यहां तक कि मांडूक्योपनिषद् पूरा इसी का अर्थ ही है। और पातञ्जल दर्शनमें ईश्वरका वाचक (नाम) कह कर इसका जप इसके अर्थ भावना को ही कहा है (तज्जपः तदर्थभावनम्) अर्थात् अर्थ भावना करना ही इसका प्रधान जप है इसके विचारसे समष्टि (पर्यक्) व व्यष्टि (प्रत्यक्) चेतन (ईश्वर–जीवात्मा) दो रूप से जो कहा जाता है उसकी एकता का ज्ञान हो जाता है (ततः प्रत्यक् चेतनाधिगमः० पञ्तं०) इसलिये अद्वैत सिद्धान्तवादी श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य जी ने पञ्चीकरण विचार नाम की इस पुस्तिका में परम हंसों की समाधि विधि के नाम से इसी ओम् का अर्थ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया है। ओम् के प्रायः ॐ, ओम् यह दो रूप लिखने में आते हैं। अर्थ विचार में ओम् के मात्राक्षर पृथक् कर (अ उ म्) समझाया गया है इससे सगुण ब्रह्म व शब्द ब्रह्म का रूप इसे कहते हैं। और अर्थ समझ जाने पर इसका पूर्ण अनुभव करके जो इसका संस्कारात्मक बुद्धि का बन जाना व निर्गुण ब्रह्म व परब्रह्मका रूप है उसे ॐ कहते हैं। इसी (ॐ) का रूपकालंकार से गणेशके रूप की व अपभ्रंशरूप से स्वस्तिक चिह्न की भी कवियों ने कल्पना की है। सो इस ओम् का संस्कृत भाषा में ही अर्थ था उसको सर्व साधारण जिज्ञासुओंके समझनेके लिये इसकी हिन्दी कर दी गई है।

पञ्चीकरण इसका इसलिये नाम रखा है कि यजुर्वेद में (पञ्च-स्वन्त पुरुष आविवेश०) व अथर्व संहिता व चरक व तैत्तिरीय उपनिषद्में आत्मा से ही पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति कह कर उसी में आत्म प्रवेश पूर्वक संसार का बनना कहा गया है। एक का ही पांच होना और पांचों का आपस में समिश्रण हो न्यूनाधिकतासे बीज अंकुर रूप हो जगत् बन जाना और सब का अन्तमें एकही हो जाना पञ्चीकरण विचार कहा गया है (वेदान्त सूत्रों व पञ्चदशी आदि में बड़े विशद रूप से इस विषय का वर्णन है) सांख्यादि शास्त्रों में अव्यक्त महान अहंकार आदि अनुक्रमसे जगत का बनना कहा गया है यह केवल प्रक्रिया भेद है या शिष्यों के समझाने के लिये श्रुति वाक्यों के आधार से पञ्च भूतों के समष्टि गुणोत्पन्न अन्तःकरण व प्राण को प्रथम कह कर पश्चात् पञ्चभूतों के पृथक् पृथक् प्रत्येक के अंश से उत्पन्न पदार्थों का होना वर्णन किया है जैसा कि परिशिष्ट में दिये हुये चित्रों के विचारने से निश्चय हो जायगा कि सब का कहना युक्तियुक्त व एक ही है सब शास्त्रों व सन्तों का कहना यही है कि एकता करो एक हो जावो (फूट न करो फूटो मत) तभी सुख होगा इसीलिये एक तत्त्वाभ्यास कहने में कहीं केवल प्रकृति से ही सब हुवा (व विकाश वादानुसार चैतन्य भी प्राकृतिक) कहा गया है। और कहीं चैतन्य के साथ उसकी शक्ति व महिमा व माया नाम से कह कर चैतन्य ही चैतन्य मात्र सब कहा गया है। किन्तु विचार व अनुभव युक्ति प्रमाण व वेद के बहुत वाक्यों से व सन्तोंके उपदेश से एक चैतन्य मात्र सत्ता स्फूर्ति पदार्थ ही होना निश्चय होता है इसी को स्पष्ट समझाने के लिये अद्वैतवाद के समस्त ग्रन्थ हैं यह बहुत ऊंचा सयुक्तिक प्रायः सर्वमान्य सिद्धान्त है इसीको बताने वाला ओम् इस शब्द का अर्थ है।

ओम् के अर्थ का विचार करने से पिण्ड (प्रत्यक् पदार्थ) ब्रह्माण्ड (पर्यक पदार्थ) के पदार्थों की एकता समझ में आ जाती है जैसे केन्द्र परिधि व विन्दु गोले का सम्बन्ध विचार करने से दोनों की एकता समझ में आ जाती है। एक हो जाने पर सब प्रथम चैतन्य सत्ता स्फूर्ति मात्र पदार्थ रह जाता है। यह एकायक समझ में नहीं आ सकने के कारण से ही द्वैत अद्वैतवाद चल पड़े हैं आरम्भवाद, सत्कार्यवाद, विवर्तवाद व कर्म, उपासना (भक्ति) ज्ञान आदि मार्ग

क्रिया इसी के समझने समझाने के योग्य शास्त्रों में कही हुई हैं। स्थूल से एक एक करने व उत्पन्न करने में प्रथम द्वैत वाद ही है। स्थूल से सूक्ष्म तक जाने के लिये भी द्वैतवाद ही व आरम्भ सत्कार्यवाद अच्छा। द्वैतवाद में कर्म उपासना इसीलिये सुख कर साधन माने गये हैं। परन्तु सूक्ष्म से कारण में पहुंचने के लिये विचार करते ही भेद लय होने लगता है यही ज्ञान व अद्वैतवाद का विवर्त है तो कारण से तुरीय समझने व अनुभव करने में द्वैत (भेद) का लेश कहां रह सकता है यही ओम् का पूरा अर्थ ज्ञान व अनुभव है।

आरम्भवाद—स्थूलसे स्थूल बनने व पैदा होनेमें लगता है जैसे दूध से दही बीज से अंकुर।

सत्कार्यवाद (परिणामवाद)—स्थूल से सूक्ष्म व सूक्ष्म से स्थूल होने में लगता है जैसे दूध के भीतर दही के परमाणु व बीज के भीतर अंकुर (शक्ति) न हो तो कैसे दही व अंकुर बन सके।

विवर्तवाद—कारण से कार्य व कार्य से कारण होने में लगता है जैसे सांप का रस्सी होना, दूध ही में दही देख पड़ना, बीज ही अपनी शक्ति द्वारा अंकुर होना (दूसरा बना सा देख पड़ना है)।

आरम्भवाद—दूसरे से दूसरा होना। सत्कार्यवाद—दूसरे से दूसरा निकल आना व परिणत होना। विवर्त दूसरेमें दूसरा देख पड़ना।

कर्म—कहीं ईश्वर है तदर्थ (तदाज्ञानुसार) सब कर्म करना संसार सुव्यवस्थित रहने के लिये (सत्)।

उपासना (भक्ति)—ईश्वर सामने है उसकी पूजा प्रार्थना आदि करना (अन्तः करण शुद्धि के लिये) (चित्)

ज्ञान—ईश्वर सर्वत्र सर्वज्ञ सर्व रूप है इसलिये हम भी ईश्वर हैं ऐसा निश्चय करना (एकता के लिये) (आनन्द)

सबको इसीसे इन तीन (सत् = है = सदा रहना १) (चित् = ज्ञान रूप समझ के साथ २) (आनन्द = सुख मय सुख सहित ३) बातों की लालसा रहती है क्योंकि ईश्वर इन तीन गुण युक्त है और उसीके हम अंश जीव हैं। सो यह तीनों बातें (सत्, चित्, आनन्द) तभी प्राप्त होती हैं कि जब ॐ को अच्छी तरह अपनाया जाय।

॥ हरि ॐ तत्सद् ब्रह्मणेनमः॥

भूमिका परिशिष्ट

जिनके मत से प्रथम चिन्मात्र एक तत्त्व था उनके मत से इस पंचीकरण के अनुसार जगत् का उद्भव लय चिन्तन करना चाहिये। (देखो पृ० परिशिष्ट चित्र विचार)॥ जिनके मत से प्रथम एक तत्त्व अचिन्मात्र था उनके मत से निम्न लिखित चित्र विचारना चाहिये अचित् (प्रकृति) के तीन गुण होते हैं उनके त्रिवृत्करण से सब पदार्थ बनते रहते हैं।

गुण तीन — सत्व	रजः	तमः
उनका लक्षण—प्रकाश	प्रवृत्ति	मोह
उनके परिणाम—ज्ञान	कर्म	द्रव्य

अच्छा लगना मात्र ही सत्त्व की सत्ता है। कुछ अच्छा कुछ बुरा लगना रजः की सत्ता है। बुरा लगना मात्र तमोगुण की सत्ता है। प्रत्येक व्यक्तिका प्रत्येक पदार्थ में भिन्न २ भाव होना प्रत्येक गुणों की सत्ता है। विकाशवाद के अनुसार गुणों के द्वारा अचित् से ही चित् की भी उत्पत्ति होती है।

	सत्त्व	रजः	तमः
सात्विक —	आत्मा १	ईश्वर २	जीव ३
राजस —	अन्तःकरण ४	प्राण ५	इन्द्रिय ६
तामस —	देह ७	महाभूत पांच ८	काष्ठलोष्ठादि ६

इस प्रकार परस्पर सम्बन्ध से गुणों द्वारा ही अचित् से चित् (आत्मेश्वर जीव) माने गये हैं आगे इन्हीं ६ पदार्थों से समस्त संसार बनता रहता है। परन्तु जिनको प्रथम चिन्मात्र मान्य है वह चित् (ब्रह्म) के साथ ही उसकी महिमा व शक्ति (व उसी के ही गुण भाव) त्रिगुणामाया (प्रकृति-स्वभाव जिसे अचित् कहते हैं) मान ली गई है। वैदिक सिद्धान्त इसी प्रकार का है और यही विशेष सयुक्तिक और उत्तम है।

॥ ॐ ॥

॥ ॐ स्वस्ति श्रीगणेशायनमः ॥

पञ्चीकरणम् (प्रणवार्थः)

अथातः परमहंसानां समाधिविधिं व्याख्यास्यामः । सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म । ब्रह्मणोऽव्यक्तम् । अव्यक्तान्महत् । महतोहङ्कारः । अहंकारात्पंचतन्मात्राणि । पंचतन्मात्रेभ्यः पंचमहाभूतानि । पंचमहाभूतेभ्योखिलं जगत् ॥ १ ॥

पञ्चानांभूतानामेकैकं द्विधाविभज्य स्वार्धभागं विहायार्धभागं चतुर्धाविभज्येतरेषु योजिते पंचीकरणं मायारूपदर्शनमध्यारोपापवादाभ्यां निष्प्रपञ्चंप्रपञ्च्यते ॥ २ ॥

पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि तत्कार्यं च सर्वं विराडित्युच्यते, एतत्स्थूलशरीरमात्मनः । इन्द्रियैरर्थोपलब्धिर्जागरितम् । एतदुभयाभिमान्यात्मा विश्व एतत्त्रयमकारः ॥ ३ ॥

अपञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि पञ्चतन्मात्राणि तत्कार्यं च पञ्चप्राणा दशेन्द्रियाणि मनोबुद्धिश्चेति

सप्तदशकं लिंगंभौतिकं हिरण्यगर्भ इत्युच्यते एत-त्सूक्ष्मशरीरमात्मनः । करणेषूपसंहृतेषु जागरित संस्कारजः प्रत्ययःसाविषयः स्वप्न इत्युच्यते । तदुभया-भिमान्यात्मा तैजस एतत्त्रयमुकारः ॥ ४ ॥

शरीरद्वयकारणमात्माज्ञानं साभासमव्याकृतमि-त्युच्यते । एतत् कारणशरीरमात्मनः । तच्च न सन नासन्न नापिसदसत् । न भिन्नं नाभिन्नं नापिभिन्नाभिन्नं कुतश्चित् । न निरवयवं न सावयवं नोभयम् । किन्तु केवल ब्रह्मात्मैकत्त्वज्ञानापनोद्यम् । सर्वप्रकारज्ञानो-पसंहारे बुद्धेः कारणात्मनावस्थानं सुषुप्तिः । तदुभ-याभिमान्यात्मा प्राज्ञ एतत्त्रयं मकारः ॥ ५ ॥

अकार उकारे । उकारो मकारे । मकार ओङ्कारे । ओङ्कारोहम्येव अहमेवात्मा साक्षीकेवलश्चिन्मात्रस्व-रूपो ना ज्ञानं नापि तत्कार्यम् । किन्तु नित्य शुद्ध बुद्धमुक्तसत्यस्वभावं परमानन्दाद्वयं प्रत्यग्भूत-चैतन्यं ब्रह्मैवाहमस्मीत्यभेदेनावस्थानं समाधिः ॥६॥

तत्वमसि । ब्रह्माहमस्मि । प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म । अयमात्मा ब्रह्म । इत्यादि श्रुतिभ्यः । इति पंचीकरणं भवति ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं पंचीकरणम् ॥

॥ पञ्चीकरण का भाषानुवाद । (प्रणव का अर्थः)

प्रणव [ओम्]

अब यहांसे परमहंसोंकी समाधि विधिको अच्छे प्रकार कहेंगे। सत् (है) इस शब्दसे कहने योग्य अविद्याचित्रित ब्रह्म (था)—

टिप्पणी—अविद्या चित्रित का अर्थ यह है कि उस ज्ञान स्वरूप ब्रह्म में अविद्या अर्थात् अज्ञान व अविद्यमान माया उपदेश के लिये मान ली गई है क्योंकि ज्ञानी में प्रमत्तता उन्मत्तता जड़ता का भी ज्ञान होना सम्भव है परन्तु अज्ञानी में ज्ञान होना असम्भव है। जैसे बुद्धिमान पुरुष पागल का स्वांग भर सकता है किन्तु पागल कोई भी क्रम बद्ध कार्य नहीं कर सकता। इसलिये पहिले पहिल जो एक तत्व था वह अपनी समस्त शक्ति व महिमा जो प्रावल्य में जगद्रूप दिखती है उससे युक्त था ऐसा मान कर ही आगे कहना बनता है पश्चात् अनुभव होने पर संशय नहीं रहता शक्ति महिमा जगद्रूपता ही अविद्यमान माया सूत में कपड़े की भांति दिखती है।

(उस) ब्रह्म से अव्यक्त (अर्थात् सत्व रजः तमः की साम्यावस्था रूप माया प्रकृति प्रधान)। अव्यक्त से महत्। महत् से अहंकार। अहंकार से पांच तन्मात्रायें (शब्दतन्मात्रा १ स्पर्शतन्मात्रा २ रूपतन्मात्रा ३ रसतन्मात्रा ४ गन्धतन्मात्रा ५ अर्थात् सूक्ष्म पंचमहाभूत)। तन्मात्राओंसे पांचमहाभूत (आकाश१ वायु२ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५)। महाभूतोंसे सब संसार(बना)॥१॥

पांचों भूतों में से प्रत्येक के दो दो हिस्से करके अपने आधे आधे भाग को छोड़ कर और आधे आधे भाग के चार चार टुकड़े करके दूसरों में से मिला देने पर पञ्चीकरण होता (अर्थात् प्रत्येक भूतों में आधा अपना और आधे में चौथाई चौथाई दूसरे भूत मिलना पञ्चीकरण कहाता है राशि पूरी बनी रहते संमिश्रण हो जाना पञ्चीकरण है) यह पञ्चीकरण माया रूप दृष्टि गोचर होता है। इस प्रकार अध्यारोप (संघात

को दूसरा पदार्थ समझना) अपवाद (संघात को पृथक २ करके मूल तत्व खोजना) से वही प्रपञ्च रहित (ब्रह्म) प्रपञ्चित होता है ।।२।।

पञ्चीकरण किये हुये पांचो महाभूत और इनका कार्य सब विराट कहा जाता है। यह विराट (संसार) और अपना शरीर स्थूल है। इन्द्रियों से विषयोंका साक्षात्कार (शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध आदि का ज्ञान होना) जागरित (जाग्रदवस्था कहाती) है। इन दोनों (स्थूल जागरित) का अभिमानी आत्मा विश्व कहलाता है यह तीनों अर्थात् स्थूल जागरित तथा विश्व (ओंकारका प्रथम अक्षर) अकार (अ कहे जाते हैं)।।३।।

जिन पांच भूतों का पञ्चीकरण नहीं हुवा व सूक्ष्मता हुवा है उनको पांच तन्मात्रायें कहते हैं। यह पञ्चतन्मात्रा और उनका कार्य पांचो प्राण दश इन्द्रियां मन तथा बुद्धि यह सत्रह तत्व लिंग (लक्षण मात्र) सूक्ष्म भूतों से बना हुवा (संसार के भीतर भरा हुवा) हिरण्य गर्भ कहलाता है (यह संसार के भीतर और) अपने शरीर के भीतर का शरीर सूक्ष्म है। इन्द्रियों के (बाहिरी विषयों से) उपसंहार हो जाने पर जाग्रदवस्था के संस्कारों से होने वाला प्रपञ्च सब विषयों सहित (अर्थात सोने समय का आन्तरिक प्रपञ्च) स्वप्न कहा जाता है। इन दोनों (सूक्ष्म स्वप्न) का अभिमानी आत्मा तैजस होता है। यह तीनों अर्थात् सूक्ष्म स्वप्न तथा तैजस (ओंकार का दूसरा अक्षर) उकार (उ कहे जाते हैं) ।। ४ ।। दोनों (स्थूल सूक्ष्म) शरीरों का कारण अपने आपका न जानना आभास के सहित अव्याकृत कहा जाता है (यह सब संसार का कारण) और अपने शरीर का कारण, कारण शरीर है (यह) न सत् (है) न असत् (नहीं है)। और न कि

सदूसत् (है नहीं है) कहा जा सकता है। न भिन्न (पृथक २) न अभिन्न (अपृथक २) न कि भिन्नाभिन्न (पृथक व मिला हुआ) ही कहा जा सकता है। और यही कहाँ से कहा जा है कि वह अवयवों (अङ्गों) वाला है व अङ्गों वाला नहीं है व अङ्गसांगता वाला ही है। किन्तु वह केवल ब्रह्म आत्मा के एकत्व ज्ञान से अपनोद्य अर्थात् एक हो जाना परन्तु जानना नहीं कि एक हो गया। सब प्रकार के ज्ञान के समाप्त होने पर बुद्धि का कारण भाव से ठहर जाना सुषुप्ति है इन दोनों (कारण सुषुप्ति) का अभिमानी आत्मा प्राज्ञ कहाता है। यह तीनों अर्थात् कारण सुषुप्ति तथा प्राज्ञ (ओंकार का तीसरा अक्षर) मकार (म् कहे जाते हैं) ॥ ५ ॥

अ (स्थूल) उ में (सूक्ष्म में) और उ (सूक्ष्म) म (कारण) में लय हो जाता है। तथा म (कारण) ओम् (ब्रह्म) में लय पाता है। ओम् (सगुण ब्रह्म) अहमि (आत्म स्वरूप में) ब्रह्मात्मैकत्व ज्ञान साधन में लय हो जाता है। मैं ही आत्मा(आपही आप)द्रष्टृमात्र (देखनेवालाही) केवल चिन्मात्र (ज्ञान स्वरूप) हूँ। न अज्ञान हूँ न अज्ञानका कार्य हूँ। किन्तु सदा रहने वाला निर्मल ज्ञानवान् स्वतन्त्र सत्य स्वभाव श्रेष्ठ सुख स्वरूप हूँ। प्रत्येक प्राणियों का चेतन रूप ब्रह्म ही मैं हूँ। इस अभेदसे ठहर जाना ज्ञान समाधि कही जाती है ॥ ६ ॥

क्योंकि उपनिषद् वाक्योंके यह प्रमाण हैं—तत्वमसि = वह तू है। ब्रह्माहमस्मि = ब्रह्म मैं हूँ। प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म = जिससे जाना जाता है व सुख स्वरूप मैं हूँ। अयमात्मा ब्रह्म = यह आत्मा (अपना वास्तविक स्वरूप) ब्रह्म है। इत्यादि श्रुतियोंसे जाना गया है। यह पञ्चीकरण नामका विचार होता है ॥ ७ ॥

॥ इति पञ्चीकरण अर्थात् ओम् का अर्थ ॥

❀ पंचीकरण का पदच्छेद पूर्वक अर्थ ❀

शब्द	अर्थ
अथ	= अब (अथवा मङ्गल व अधिकार व अनन्तर अर्थ का बताने वाला शब्द है) अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म, कारण पदार्थका जिसको बोध हो उसीका अधिकार है व बोधके पश्चात् इसे समझे)
अतः	= यहां से
परमहंसानाम्	= परम हंसों की (परम श्रेष्ट,हंस,साधक विवेकी पुरुषोंकी)
समाधिविधिम्	= समाधि (चित्तस्थिर) विधि (प्रकार) को
व्याख्यास्यामः	= विशेषता से कहेंगे
सत् + शब्द वाच्यम्	= सत् (है, इस) शब्द से कहने योग्य
अविद्याशबलम्	= अविद्या से चित्रित (अविद्या अर्थात् अज्ञान रूप व वस्तुतः जो न हो यानी माया व अपनी अव्यक्त शक्ति इच्छा महिमा ऐश्वर्य जो संसार का मूल प्रधान प्रकृति कहाती है उससे सुशोभित सत्ता मात्र)
ब्रह्म	= सब से बड़ा सर्व शक्तिमान् सर्वज्ञ (ज्ञान, अज्ञान, उन्माद, प्रमोद सभी भावोंका भण्डाररूप सगुण सर्वस्वरूप कूटस्थ एक पदार्थ)था
ब्रह्मणः	= (उस) ब्रह्मसे (सर्वसत्तामात्रसे)
अव्यक्तम्	= अप्रकटरूप (अर्थात् सत्व रजः तमः यह तीनों गुण साम्यावस्थामें हों पृथक् २ प्रकट रूपमें न दिखते हों) प्रधान प्रकृति माया शक्ति (हुई)
अव्यक्तात्	= (उस) अव्यक्त प्रधान प्रकृति से
महत्	= महत् तत्व (बड़प्पनका गुण) अर्थात् बुद्धि, शक्ति व इच्छा कामना व सर्वदेशिविशेष गुण मात्र (हुवा)
महतः	= (उस) महत्से (सर्वदेश व्याप्त महत्त्व गुणयुक्त समष्टिबुद्धीच्छा शक्ति से)
अहंकारः	= अहंकार तत्त्व (परमाणु-सत्तामात्र एकदेशित्वगुणविशेष पार्थक्य बोधक व्यष्टिबुद्धीच्छा-शक्ति मूल) हुवा
अहंकारात्	= अहंतत्व से (पार्थक्य गुण विशेष से)
पंच तन्मात्राणि	= पांच तन्मात्रायें अर्थात् सूक्ष्म महाभूत–केवल वही वही भूतमात्र–शब्द तन्मात्र १ स्पर्श तन्मात्र २ रूपतन्मात्र ३ रस तन्मात्र ४ गन्ध तन्मात्र ५ हुये
पंचतन्मात्रेभ्यः	= (उन) पांच तन्मात्राओं से
पंच महाभूतानि	= पांच महाभूत अर्थात् आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी यह प्रकट हुये

शब्द — अर्थ

पंच महाभूतेभ्यः = इन पांचमहाभूतोंसे
अखिलम् = सब
जगत् = संसार (परिवर्तनशील, अस्थिर प्रवाहात्मक) बना

पंचानाम्, भूतानाम् = पांचों भूतों का
एकैकम् = (पृथक् २) एक एक को
द्विधा = दो दो (२-२)
विभज्य = विभाग करके
स्वार्धभागम् = अपना २ आधा आधा
विहाय = छोड़ कर
अर्धभागम् = आधे आधे भाग को
चतुर्धा = चार चार (४-४)
विभज्य = विभाग करके
इतरेषु = औरों औरों में
योजिते = मिलाने पर
पंचीकरणम् = पंचीकरण (होता है) अर्थात् प्रत्येक भूतों में आधा आधा अपना और आधे का चौथाई चौथाई चारों भूतों में मिलाना तो एक एक भूत की राशि उतनी ही रही परन्तु सम्मिश्रण हो गया यानी आधा अपना और आधेमें चारो और
मायारूपदर्शनम् = (वही पञ्चीकरण) माया रूप (जादूका सा खेल) दृष्टि गोचर होने लगता है ।
अध्यारोप+अपवादाभ्याम् = अध्यारोप और अपवाद से । एक एक अवयवका मिल कर एक विशेष पदार्थ कल्पित होना अध्यारोप कहाता है अर्थात् क्रम संघात को दूसरा पदार्थ समझना। और एक एक अवयव की भिन्नता से वर्तमान पदार्थ असिद्ध कर मूल तत्वका देखना अपवाद कहाताहै।
निष्प्रपञ्चम् = प्रपञ्च रहित
प्रपञ्च्यते = प्रपञ्चित होता है । (पांचों भूतोंसे बने को या दिखावटी विस्तार को प्रपञ्च कहते हैं)

पंचीकृत पंच महाभूतानि = पंचीकरण किये हुये पांचों महाभूत
च = और
तत्कार्यम् = उनका कार्य
सर्वम् = सब
विराट् इति = विराट् ऐसा
उच्यते = कहा जाता है
एतत् = यह (विराट्)
स्थूल शरीरम् = स्थूल शरीर है
आत्मनः = अपना (शरीर) अर्थात् बाहर का जगद्रूप—समष्टि और अपना अपना पृथग्रूप—व्यष्टि यानी पिण्ड व ब्रह्माण्ड का स्थूल शरीर कहाता है। स्थूल शरीर-मोटा मोटा खोखला रूप ऊपरी घेरा (कवर Cover)
इन्द्रियैः = इन्द्रियों से (कान, खाल आंख, जीभ, नाक यह ५ ज्ञानेन्द्रियां हैं। मुंह, हाथ, पांव, लिंग, गुदा यह पांच कर्मेन्द्रियां हैं। इन्द्रिय इन अङ्गोंकी विषय ग्रहण शक्तिको कहते हैं)

शब्द — अर्थ

अर्थोपलब्धि-अर्थं = विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ५ वाणी, ग्रहण, गति, क्षण त्याग ५) की उपलब्धि—प्राप्ति (साक्षात्कार)

जागरितम् = जाग्रदवस्था है

एतद्-उभय-अभिमानी = इन दोनो (स्थूल और जाग्रत्) का अभिमान करने वाला।

आत्मा = आप

विश्वः = विश्व (कहाता है)

एतत्त्रयम् = यह तीनों (स्थूल, जागरित, विश्व का तिक्का)

अकारः = अ (अर्थात् ओम् का प्रथम अक्षर है (अ—आदि—पहले समझ में आने वाला। अ—आप्ति—प्रत्यक्ष मिलने वाला)

अपंचीकृत पंच महाभूतानि = नहीं (या कि अल्पमात्र) हुवा है पञ्चीकरण जिनका ऐसे पांच महाभूत (पञ्चतत्व)

पंचतन्मात्राणि = पांच तन्मात्रा कहे जाते हैं (अर्थात् सूक्ष्म, महाभूत शब्दादि)

च = (वह सूक्ष्म पञ्च तत्त्व) और

तत्कार्यम् = उनका कार्य

पंच प्राणा = पांच प्राण (१ प्राण—हृदय से मुख तक। २ अपान—नाभि से गुदा तक। ३ समान—नाभि हृदय के बीच में। ४ उदान—कण्ठ से सिर तक। ५ व्यान—सब देह के भीतर)

शब्द — अर्थ

दश-इन्द्रियाणि = दशो इन्द्रियां (इन्द्रिय स्थान की सूक्ष्म विषय ग्राहक शक्ति)

मनः = संकल्प विकल्पात्मक अन्तःकरण वृत्ति (चित्त सहित मन)

च = और

बुद्धिः = निश्चयात्मक अन्तःकरण की वृत्ति (अहंकार सहित बुद्धि) अन्तः करण—भीतरी इन्द्रिय जिसकी चार वृत्तियां (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) कही जाती है। बुद्धि—अपने स्थानमें रह कर निश्चय करने वाली वृत्ति जिसका भेद ही मूल अहंकार है। मन—किरण रूप संचारी इन्द्रियों में जाकर संकल्प विकल्प पूर्वक विषय ग्राहक वृत्ति जिसका भेद चित्त है।

इति = इस प्रकार

सप्तदशकम् = सत्रह तत्त्व वाला (१० इन्द्रिय ५ प्राण १ मन १ बुद्धि)

लिङ्गम् = लिंग (लक्षण) वाला।

भौतिकम् = (सूक्ष्म) भूतोंसे बना हुवा

हिरण्य गर्भः = (हिरण्य अर्थात् तैजस पदार्थ हैं गर्भ में जिसके वह ब्रह्माण्ड व्यापी) हिरण्यगर्भ (सूक्ष्मसमष्टि शरीर)

इति = ऐसा

उच्यते = कहा जाता है

एतत् = यह (हिरण्य गर्भ)

सूक्ष्म शरीरम् = सूक्ष्म शरीर है

शब्द	अर्थ
आत्मनः	= अपना (अपने शरीर में भी भरा हुवा १७ तत्त्वों का सूक्ष्म शरीर कहाता है अर्थात् ब्रह्माण्ड व पिण्ड के भीतर सत्रह प्रकार की जो शक्ति भरी हुई है वही सूक्ष्म शरीर कही जाती है। स्थूल व्याप्त कार्य कारक विशेष शक्ति)
करणेषु + उपसंहृतेषु	= इन्द्रियों के उपसंहार होनेपर अर्थात् बाहिरी काम छूट जाने पर
जागरित संस्कारजः	= जाग्रत अवस्थाके संस्कारों से होने वाला
प्रत्ययः	= आन्तरिक वासनामात्र भोग का प्रत्यक्षाभास।
सविषयः	= सब विषयों सहित। (सोने समय का भीतरी दिखावा)
स्वप्नः	= सपना (ख़्वाब)
इति	= ऐसा
उच्यते	= कहा जाता है
तद् + उभय + अभिमानी	= उन दोनों (सूक्ष्म, स्वप्न) का अभिमानी अर्थात् मैं व मेरा माननेवाला
आत्मा	= आप
तैजस	= तैजस (कहाता है)
एतत्	= यह
त्रयम्	= तिक्का (तीनों मिलकर) (सूक्ष्म १ स्वप्न २ तैजस ३ का बोध कराने वाला)

शब्द	अर्थ
उकार	= उ अर्थात् ओम् का दूसरा अक्षर है (उ—उभय—दूसरा—पहले अ से ऊंची कक्षाका पदार्थ उ—उत्कर्ष—ऊंची समझका पदार्थ ऊपर व ऊंचा होनेसे उ कहाता है
शरीरद्वयकारणम्	= दोनों (स्थूल सूक्ष्म) शरीरों (देहों) का कारण
आत्म + अज्ञानम्	= अपने आपको भी न जानना (न जाननेकी भांति)
साभासम्	= आभासके साथ (आभास दीप्ति, प्रतीति, प्रतिबिम्ब, तेज छाया, समानता सादृश्य आदि की भांति)
अव्याकृतम्	= अव्याकृत (व्याकृत अर्थात् व्याकरण, विस्तार नानात्व रहित) है। अनेकतासे रहित एकीभूत सब एक ही हुवा, समभाव चैतन्य का घनीभूत ईश्वर
इति	= ऐसा
उच्यते	= कहा जाता है
एतत्	= यह (अव्याकृत)
कारणशरीरम्	= कारण शरीर है
आत्मनः	= अपना (अपने दोनों स्थूल सूक्ष्म शरीरोंका कारण मूल प्रकृति है) अर्थात् पिण्ड ब्रह्माण्ड का कारणमात्र।
तत् + च	= सो वह (कारण रूप)
न	= न
सत्	= सत्तामात्र (है, ऐसा) व स्थूल
न	= न

शब्द अर्थ

असत् = अभाव मात्र (नहीं है, ऐसा) व सूक्ष्म

न + अपि = और न

सत् + असत् = है व नहीं है या कि स्थूल, सूक्ष्म रूप है ऐसा ही कहा जा सकता है

न = (और) न (वह)

भिन्नम् = पृथक व फटा हुआ

न + अभिन्न = न अपृथक व जुड़ा हुवा

न + अपि = और न

भिन्नाभिन्नम् + कुतः + चित् = पृथक अपृथक फटा जुड़ा ही कहीं से (कहा जा सकता है)

न निरवयम् = न बिना अङ्गों वाला

न सावयम् = न अङ्गोंके सहित

न + उभयम् = (और) न निरङ्ग व सांग ही कहा जा सकता है।

किन्तु = बल्किन्

केवल = खाली (सिर्फ)

ब्रह्मात्मैकत्वज्ञानापनोद्यम् = ब्रह्म (ईश्वर) आत्मा (आप–जीव) के एकत्व ज्ञानसे अपनोद्य (अर्थात् ब्रह्म आत्माका एक हो जाना परन्तु जानना नहीं कि एक हो गया। इस प्रकारका (अनिर्वच-नीय) कारण शरीर होता है।

सर्व प्रकार ज्ञान + उपसंहारे = सब प्रकारके ज्ञानके नाश हो जाने पर

बुद्धेः = बुद्धिका

शब्द अर्थ

कारणात्मना = कारण आत्मा से अर्थात् बुद्धिका अपने कारण भाव में।

अवस्थानम् = ठहर जाना

सुषुप्तिः = सुषुप्ति (अवस्था कही जाती है) घन नींद जब स्वप्न न देखता हो) उसे सुषुप्ति कहते हैं

तद्+उभय+अभिमानी+आत्मा = उन दोनों (कारण और सुषुप्ति का अभिमान करने वाला आप

प्राज्ञः = प्राज्ञ (सब कुछ एक साथ जानने वाला कहाता है)

एतत् = यह

त्रयम् = तिक्का (तीनों कारण १ सुषुप्ति २ और प्राज्ञ ३)

मकारः = म अर्थात् ओम् का तीसरा अक्षर है। (म–मापने वाला व फेंकने वाला अर्थात् म कारण को कहते हैं कारण में ही सब लय होता और उसी से पुनः निकलता है)

अकारः = अ अर्थात् स्थूल

उकारे = उ अर्थात् सूक्ष्म में (लय होता है)

उकारः = (और) उ अर्थात् सूक्ष्म

मकारे = म अर्थात् कारण में (लय पाता है)

मकारः = म अर्थात् कारण

ओंकारे = ओम् अर्थात् सगुण ब्रह्ममें (लय हो जाता है)

शब्द	अर्थ
ओंकारः	(वह) ओम् (सगुण ब्रह्म)
अहमि	अहंभाव में (मैं हूँ इस सत्ता मात्र में)
एव	ही (ठहर जाना चाहिये)
अहम्	मैं (आत्म स्वरूप निर्गुण)
एव	ही
आत्मा	आप
साक्षी	देखने वाला (द्रष्टामात्र)
केवल	खाली (प्योर Pure)
चित् + मात्रस्वरूपः	ज्ञानरूप (हूँ)
न+अज्ञानम्	न अज्ञान हूँ
न+अपि	और न
तत् + कार्यम्	उस (अज्ञान) का कार्य हूँ (संसार रूप हूँ)
किन्तु	बल्कि
नित्य	सदा रहने वाला
शुद्ध	निर्मल (पाप रहित)
बुद्ध	ज्ञानवान् (समझदार)
मुक्त	छुटा हुआ, अबद्ध
सत्यस्वभावम्	सत्य (यथार्थ) स्वभाव (अपनी सत्ता) वाला
परम+आनन्द+अद्वयम्	श्रेष्ठ सुख स्वरूप द्विभांति रहित
प्रत्यक्+भूत चैतन्यम्	प्रत्येक प्राणियों का चेतनरूप (आपा)
ब्रह्म	ब्रह्म (मूलतत्त्व = असलियत)
एव	ही
अहम्	मैं
अस्मि	हूँ
इति	इस प्रकार
अभेदेन	अभेद से
अवस्थानम्	ठहरना

शब्द	अर्थ
समाधिः	(ज्ञान) समाधि (कही जाती है) अर्थात् यही निर्विकल्प समाधि है। (क्योंकि उपनिषद् वाक्योंके यह प्रमाण हैं- १ तत्वमसि छांदो० २ ब्रह्माहमस्मि बृह० ३ प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म एतरेप० ४ अयमात्मा ब्रह्म मांडू०
तत्	वह (आत्मा)
त्वम्	तू
असि	है
ब्रह्म	परंतत्त्व (आत्मा)
अहम्	मैं
अस्मि	हूं
प्रज्ञानम्	ज्ञान स्वरूप व ज्ञानाधार व ज्ञप्तिमात्र (आत्मा)
आनन्दम्	सुख स्वरूप, सुखमात्र
ब्रह्म	परंतत्त्व (मैं हूं)
अयम्	यह (व्यष्टि, पिण्ड व्याप्त)
आत्मा	आपा रूप (मैं मात्र)
ब्रह्म	परंतत्त्व (हूं)
इत्यादि	इस प्रकार और भी
श्रुतिभ्यः	श्रुतियों (वेदों व उपनिषद् वाक्यों) से निश्चय करना चाहिये
इति पंचीकरण भवति	ऐसा पञ्चीकरण विचार होता है एकही पांच प्रकार का होकर और पांचो पांचो का सम्मिश्रण हो संसार रूप हुवा सा विचारने से सावधान होता है।

॥ इति पञ्चीकरण (प्रणवार्थः) समाप्त ॥

परिशिष्टम्

आत्मा = ॐ
ब्रह्म + माया = ओम्
ईश्वर+प्रकृति = शक्ति, प्रधान
अव्यक्त (म्)
} कारण

(सत्त्व प्रधान) महान् – काम–
इच्छा–समष्टिबुद्धि
(रजः प्रधान) अहंकार
(तमः प्रधान) पंचतन्मात्र (उ)
} सूक्ष्म

पंच महाभूत
जगत् (अ)
} स्थूल

यह चित्र इसी ग्रन्थके उपक्रमानुसार है

अक्षर	अ	उ	म्	ओम्
अवस्था–	जाग्रत्	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरीय
समष्टि–	विराट	हिरण्यगर्भ	ईश्वर	परमात्मा
व्यष्टि–	विश्व	तैजस	प्राज्ञ	आत्मा
पदार्थ–	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	आत्ममात्र

जैसे एक गेंदकी भांति कोई गोल (अण्डाकार) वस्तु लेना उसमें जहां चाहे वहीं केन्द्र मान कर परिधि पर्यन्त संबंध मान ले तो गोला सब केन्द्रों का आधार व सम्बन्धी होगा और केन्द्र भिन्न २ अपनी सत्ता रखते हुये गोले के आश्रयी सम्बन्धी होंगे। इसी प्रकार पिंड (केन्द्र) व ब्रह्मांड (परिधि गोला , का सम्बन्ध है । पिण्ड (बिन्दु) की इन्द्रियां और ब्रह्माण्ड विराटकी इन्द्रियां देवताही कही जाती हैं दोनों परस्पर सम्बन्धी हैं।

अधिभूत	अधिदैव	अध्यात्म	
विषय	(देवता)	इन्द्रिय	अन्तःकरण
संज्ञान	चैतन्य	स्फुरण	
चिन्तन	वासुदेव	चित्त	
अहंकरण	रुद्र	अहंकार	
संकल्पविकल्प	चन्द्र	मनः	
निश्चय	ब्रह्मा	बुद्धिः	
शब्द	दिशा	श्रोत्र	ज्ञानेन्द्रिय
स्पर्श	वायु	त्वचा	
रूप	सूर्य	नेत्र	
रस	वरुण	रसना	
गन्ध	अश्विनी	नासिका	
भाषण	अग्नि	वाक्	कर्मेन्द्रिय
ग्रहण	इन्द्र	हस्त	
गवन	विष्णु	पाद	
क्षरण	प्रजापति	उपस्थ	
त्याग	मृत्यु	गुदा।	

संयोग	समष्टि	व्यष्टि
कार्य	ब्रह्माण्ड	पिण्ड

छिद्र—अवकाश	विष्णु	आकाश
विक्षेप-गति	सूर्य	वायु
ताप—पाचन	शक्ति	तेज
शैत्य – क्लेदन	गणेश	जल
आधार-धारण	महेश	पृथिवी
ऊर्ध्वनयन–निर्माण	आकाश	उदान
पाचन—परिणमन	अग्नि	समान
प्राणन—आकर्षण	सूर्य	प्राण
संचालन-रोधन	वायु	व्यान
अधोनपन–अपकर्षण	पृथ्वी	अपान

पंच महाभूतों के सूक्ष्म व स्थूल रूप से सम्मिश्रण होकर जो पदार्थ बनते हैं उनका संक्षेप साधारण रूपसे निम्न लिखित चित्र से बहुत कुछ समझना विस्तार रूपसे तो अनन्त आघात प्रत्याघात अंशांश संश्लेष विश्लेष अनेक प्रकारसे समस्त संसारही बन रहा है।

अपञ्चीकृत (सूक्ष्म पञ्चीकरण) किये सूक्ष्मभूत (तन्मात्र) कार्य

यह सूक्ष्म शक्तियां पिण्ड ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं—

	आकाश	वायु	तेज	जल	पृथ्वी	= सूक्ष्मभूत
समष्टि सत्वांश-आकाशीय-स्फुरण	चित्त	अहंकार	मनः		बुद्धि	= अन्तःकरण
समष्टि, रजोंश—वायवीय—उदान	प्राण	समान	व्यान		अपान	= प्राण
प्रत्येक, सत्वांश - तैजस —श्रोत्र	त्वचा	नेत्र	रसना		नासिका	= ज्ञानेन्द्रिय
प्रत्येक, रजोंश — आप्य —वाक्	हस्त	पाद	उपस्थ		गुदा	= कर्मेन्द्रिय
प्रत्येक, तमोंश — पार्थिव—शब्द	स्पर्श	रूप	रस		गन्ध	= तन्मात्र

पञ्चीकृत (स्थूल) भूत कार्य

(हर एक भूतोंमें हर एक के सम्मिश्रण से यह पदार्थ बनते हैं)

	आकाश	वायु	तेजः	जल	पृथिवी
आकाशीय —	शोक	काम	क्रोध	मोह	भय
वायवीय —	प्रसारण	धावन	वलन	चलन	आकुञ्चन
तैजस —	निद्रा	तन्द्रा(तृषा)	क्षुधा	कान्ति	आलस्य
जलीय —	लाला	स्वेद	मूत्र	शुक्र	रक्त
पार्थिव —	रोम	चर्म	नाड़ी	मांस	अस्थि

(यह सब व्यष्टि गत स्थूल शरीरमें देख पड़ते हैं)

महाभूत विशेष कार्य

(इसी प्रकार प्रत्येक भूतोंमें कुछ न कुछ विशेषतासे अनेकानेक पदार्थ बने)

	आकाश	वायु	तेज	जल	पृथ्वी
लक्षण —	रिक्त	गति	उष्ण	शीत	जड़ता
गुण —	लघु	रूक्ष	तीक्ष्ण	स्निग्ध	गुरु
उपमा —	आत्मा	प्राण	अहंकार	मनः	देह
दिव्यता —	जीवन	स्पर्शन	वाक्	प्राण	मनः
विकार —	परिश्रम	श्वास	उष्णता	स्वेद	मल
कोश —	आनन्दमय	प्राणमय	विज्ञानमय	मनोमय	अन्नमय

आत्मा = एक पदार्थकी द्विधांशक्ति। **चित् अचित्** = (सापेक्षसे कल्पित)

चित् - परा - चैतन्य - क्षेत्रज्ञ - अक्षर - परस्तात्।

अचित् - अपरा - जड़ - क्षेत्र - क्षर - अवस्तात्।

सत्व रजः तम = दो पदार्थों से त्रिधा - १ चित् से सत्व। २ अचित् से तम। ३ सम्मिश्रणसे रजः।

आकाश वायु तेज जल पृथ्वी = तीन पदार्थों से पञ्चधा - सत्व से आकाश १। सत्वरजसे वायु २। रजसे तेज ३। रज तम से जल ४। केवल तम से पृथिवी ५।

चित् { ईश्वर (समष्टि व्याप्त)
जीव (व्यष्टि व्याप्त)

अचित् { सत्व-प्रकाश-ज्ञान
रजःप्रवृत्ति-कर्म-
तप-मोह-द्रव्य

क़ानून प्रेस, कानपुर में मुद्रित।

निवेदन

यों तो वेदान्त विषय पर बहुत से ग्रन्थ हैं और एक से एक बढ़ कर व श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं। स्वयं श्री शङ्कराचार्य जी ने इस विषय पर अनेकों ग्रन्थ रचे किन्तु यह ग्रन्थ (पञ्चीकरण) ऐसा है जिसमें वेदान्त के मूल सिद्धान्तों को सूक्ष्म रूप में समावेश कर दिया गया है। ध्यान करने के लिये तो यह अद्वितीय ग्रन्थ है। अर्थ के सहित प्रणव (ओइम्) के जप का जो विधान (तज्जपस्तदर्थ भावनम्) श्री पातञ्जल योग दर्शन में बतलाया गया है उसकी भी पूर्ति इस ग्रन्थ से होती है क्योंकि इसमें सृष्टि की उत्पत्ति व लय तथा मध्य की एवं स्थूल, सूक्ष्म व कारण अवस्थाओं का वर्णन करते हुए ओइम् शब्द की पूर्ण व्याख्या की गई है। इस बात का अनुभव करते हुए कि बहुत से अधिकारी सज्जन ऐसा ग्रन्थ न मिलने और संस्कृत न जानने के कारण इस अनुपम रचना के लाभ से वञ्चित रह जाते हैं इसीलिये इस ग्रन्थ को भाषा टीका व उत्तम सरल व्याख्या सहित प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इस ग्रन्थ के व्याख्याकार ग्राम अमौर जिला कानपुर निवासी श्रीयुत शास्त्री महादेव जी पाण्डेय हैं आप वेदान्त तथा दर्शनादिक शास्त्रोंके उच्चकोटिके विद्वान हैं। श्रीराम जानकी मन्दिरके सत्सङ्गियों के अनुरोध से उन्हों ने इस ग्रन्थ को इस रूपमें सर्व साधारण के लाभार्थ लिखने की कृपा की। इसके प्रकाशन का श्रेय सर्व श्री बाबू विश्वेश्वर दयाल जी, पं० हरप्रसाद जी भार्गव, पं० भगवती प्रसाद जी त्रिपाठी, बा० रघुनाथ प्रसाद जी गुप्त, बा० तुलसी राम जी गुप्त, बा० बाल गोविन्द जी, पं० रामाधीन जी, बा० शिव गुलाम जी आदि सत्सङ्गी महानुभावों को प्राप्त है। उक्त सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं। यदि विद्वद्जनों व धर्मानुरागी महानुभावोंने इस रचना से सन्तोषजनक लाभ उठाया तो उपनिषदादि अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन की चेष्टा की जायगी।

विनीत

रूप किशोर टण्डन एडवोकेट

सूटर गञ्ज, कानपुर